अमर उजाला

बरेली
सोमवार, 28 अगस्त 202
द्वितीय श्रावण शुक्ल-द्वादशी
विक्रम संवत-2080

PAGE NO 8 : BOTTOM

भरतनाट्यम की मुद्राओं में दिखी नटराज की छवि

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली। एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को गुरु अंबाली प्रहराज के निर्देशन में शिष्यों ने भरतनाट्यम का अद्भुत प्रदर्शन किया। शिव स्तोत्र की प्रस्तुति में नटराज तो गणेश वंदना में विनायक की छवि दिखी। वरनम में अभिनय के साथ भरतनाट्यम के तकनीकी पक्ष को नृत्य के जरिये प्रदर्शित किया। शब्दम में स्वर को महत्व देते हुए नृत्य किया। कीर्तनम में नृत्य के जरिये भगवान की स्तुति की।

विद्यार्थियों ने तिल्लाना में भरतनाट्यम के तकनीकी पक्ष को उभारते हुए अभिनय के साथ नृत्य किया। गुरु अंबाली प्रहराज ने बताया कि मंदिरों में देवदासी के जरिये इसकी शुरुआत हुई। पहले इसे दासीअट्टम नाम दिया गया। बाद में समाज ने स्वीकृति दी और यह विधा भरतनाट्यम के रूप में विख्यात हुई।

एसआरएमएस रिद्धिमा में नृत्य प्रस्तुत करतीं छात्राएं। फोटो: एसआरएमएस

भरतनाट्यम के विद्यार्थी सताक्षी, मायरा, तानिशी, काव्या, भाव्या, संस्कृति, आद्या, शाम्भवी ने कोलकाता से आए अतिथि सुकुमार जी कुट्टी के स्वर और मलय कुमार डे के मृदंगम पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर गुरुओं के साथ उपस्थित दर्शकों का दिल जीत लिया। एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देव मूर्ति, ट्रस्टी आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, सुभाष मेहरा, सुरेश सुंदरानी, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज कुमार सहित गण्यमान्य लोग मौजूद रहे।

किया. भरतनाट्यम गुरु अंबाली प्रहराज ने भरतनाट्यम के बारे में जानकारी दी.

जीत लिया दिल

उन्होंने बताया कि कैसे मंदिरों में देवदासी के माध्यम से आरंभ हुई और इसने दासीअट्टम नाम पाया. समय अंतराल के साथ यह समाज में स्वीकृत हुई और भरतनाट्यम के रूप में सुविख्यात भी. विद्यार्थियों की है. भरतनाट्यम के विद्यार्थी सताक्षी, मायरा, तानिशी, काव्या, भाव्या, संस्कृति, आद्या, शाम्भवी ने कोलकता से आए अतिथि सुकुमार कुट्टी के स्वर और मलय कुमार डे के मृदंगम पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर गुरुओं के साथ उपस्थित दर्शकों की दिल जीत लिया. इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देव मूर्ति, ट्रस्टी आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति आदि उपस्थित रहे.